कबीर-रहीम

कबीर -

दु:ख में सुमिरन सब करै, सुख में करे न कोय ।
जो सुख में सुमिरन करै, तो दु:ख काहे को होय।।
बोली एक अमोल है, जो कोई बोले जानि ।
हिये तराजू तौलि के, तब मुख बाहर आनि ।।
जहाँ दया है तहँ धर्म है, जहाँ लोभ तहँ पाप ।
जहाँ क्रोध तहँ काल है, जहाँ छिमा तहँ आप ।।
कथनी मीठी खाण्ड सी, करनी विष की लोय ।
कथनी तजि करनी करै, विष से अमृत होय ।।
माखी गुड़ में गाड़ि रहे, पंख रह्यो लिपटाय ।
हाथ मलै और सिर धुनै, लालच बुरी बलाय ।।

रहीम -

टूटे सुजन मनाइये, जो टूटे सौ बार ।
रहिमन फिर फिर पोइये, टूटे मुक्ता हार ।।
दोनों रहिमन एक से जौं लौ बोलत नहिँ ।
जान परत है काक पिक, ऋतु वसन्त के माहिँ ।।
रहिमन धागा प्रेम का मत तोरहुँ चटकाय ।
टूटे से फिर ना जुरै, जुरै गाँठ परि जाय।।
समय पाय फल होत है समय पाय परि जात ।
सदा रहै नहीं एक सी का रहीम पछतात ।।
तरुवर फल नहीं खात है, सरवर पियहिं न पान ।
कहि रहीम परकाज हित, संपत्ति संचहि सुजान ।।

इन शब्दों के अर्थ जानो-

हिय - हृदय	तहँ - वहाँ	छिमा - क्षमा
लोय - गोला	जुरै - जुड़ता है	सुजन - अच्छे लोग
पोइए - पिरोइए	तरुवर - पेड़	चटकाय - झटके में तोड़ना

१. पढ़ो और सोचकर लिखो-

क) किसी भी बात को मुख से बाहर कब लाना चाहिए ?

ख) धर्म कहाँ बसता है ?

ग) पाप किसके साथ रहता है ?

घ) अत्यधिक क्रोध से क्या होता है ?

ङ) ईश्वर कहाँ बसते हैं ?

च) कवि कथनी को छोड़ करनी पर क्यों बल देते हैं ?

छ) काक और पिक की तुलना रहीम ने किस किस से की है और क्यों ?

ज) अच्छे लोग संपत्ति का संचय क्यों करते हैं ?

२. नीचे लिखी पंक्तियों के अर्थ लिखो-

क) दु:ख में सुमिरन सब करै.....दु:ख काहे को होय ।।

ख) माखी गुड़ में गाड़ि रही ..... लालच बुरी बलाय ।।

ग) टूटे सुजन मनाइये ..... टूटे मुक्ता हार ।।

घ) समय पाय फल ..... का रहीम पछतात ।।

३. प्रत्येक वाक्यांश के लिए एक शब्द लिखो-

क) जिसका अंत नहीं है .....

ख) जिसे मूल्य में न आँका जा सके.....

ग) बुरा व्यक्ति.....

घ) अच्छा व्यक्ति.....

४. निम्नलिखित का गद्य रूप लिखो-

हिय, पोइए, छिमा, सुजन, जुरै ।

५. कविता से आगे-

कबीर और रहीम की तरह तुम किसी अन्य कवि के दोहों को याद करके कक्षा में सुनाओ और उनके अर्थ शिक्षक से पूछो ।